

ISSN 0973-3914

# रिसर्च जर्नल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेस

Peer- Reviewed Research Journal

UGC Journal No. (Old) 40942

Impact Factor 5.125 (IIFS)

Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals  
Directory © ProQuest, U.S.A. Title Id: 715205



2022

[www.researchjournal.in](http://www.researchjournal.in)

अंक 37

हिन्दी संस्करण

वर्ष - 19

जुलाई-दिसम्बर 2022

आई. एस. एन. 0973-3914

## रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेस

**Peer-Reviewed Research Journal**

UGC Journal No. (Old) 40942

Impact Factor 5.125 (IIFS)

Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest  
U.S.A. Title Id : 715205

अंक-37

हिन्दी संस्करण

वर्ष-19

जुलाई - दिसम्बर 2022

डॉ. अखिलेश शुक्ल

ऑनररी सम्पादक

प्राध्यापक, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग

उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, नैक 'ए' ग्रेड

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

प्रतिष्ठित भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवार्ड तथा पं. गोविन्द वल्लभ पंत एवार्ड से सम्मानित

[akhileshtrscollege@gmail.com](mailto:akhileshtrscollege@gmail.com)

डॉ. संध्या शुक्ल

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग

उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, नैक 'ए' ग्रेड

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

[drsandhyatrs@gmail.com](mailto:drsandhyatrs@gmail.com)

डॉ. गायत्री शुक्ल

अतिरिक्त निदेशक, सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, रीवा

[shuklagayatri@gmail.com](mailto:shuklagayatri@gmail.com)

डॉ. आर. एन. शर्मा

सेवानिवृत्त आचार्य, उच्च शिक्षा, रीवा

[rnharmanehru@gmail.com](mailto:rnharmanehru@gmail.com)

सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, रीवा

की मुख्य शोध पत्रिका

म.प्र. सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1973 के अंतर्गत पंजीकृत  
पंजीयन क्रमांक 1802, सन् 1997



## विषय विशेषज्ञ/परामर्श मण्डल

1. डॉ. अरविंद जोशी, सेवानिवृत्त आचार्य, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी  
[arvindvns@outlook.com](mailto:arvindvns@outlook.com)
2. डॉ. रामशंकर, कुलपति, पं. शम्भूनाथ शुक्ल विश्वविद्यालय, शहडोल  
[rs\\_dubey@yahoo.com](mailto:rs_dubey@yahoo.com)
3. डॉ. डी. एस. राजपूत, आचार्य, डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर  
[drdiwakarrajeut@rediffmail.com](mailto:drdiwakarrajeut@rediffmail.com)
4. डॉ. बी. के. सिंह, आचार्य, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी  
[imdrbrajesh.kv@gmail.com](mailto:imdrbrajesh.kv@gmail.com)
5. डॉ. अंजली श्रीवास्तव, सेवानिवृत्त आचार्य, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा  
[anjali\\_apsu@rediffmail.com](mailto:anjali_apsu@rediffmail.com)
6. डॉ. बी. पी. बडोला, सेवानिवृत्त आचार्य, कांगड़ा हिमाचल प्रदेश  
[bpbadola@gmail.com](mailto:bpbadola@gmail.com)
7. डॉ. आभा सक्सेना, सह प्राध्यापक, अग्रसेन कन्या स्वशासी महाविद्यालय वाराणसी  
[drabhasaxena7@gmail.com](mailto:drabhasaxena7@gmail.com)
8. डॉ. प्रज्ञा मिश्रा, आचार्य, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट  
[pragyamishramgcgv@gmail.com](mailto:pragyamishramgcgv@gmail.com)
9. डॉ. आशीष सक्सेना, आचार्य, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद उत्तर प्रदेश।  
[ashish.ju@gmail.com](mailto:ashish.ju@gmail.com)
10. डॉ. ज्योति उपाध्याय, आचार्य, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन मध्य प्रदेश  
[drjyotiupadhyay11@gmail.com](mailto:drjyotiupadhyay11@gmail.com)
11. डॉ. प्रमिला पुनिया, सह प्राध्यापक, इतिहास, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर राजस्थान  
[pramilapoonia@rediffmail.com](mailto:pramilapoonia@rediffmail.com)
12. डॉ. मृदुल जोशी, आचार्य, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार  
[dr\\_mriduljoshi@yahoo.com](mailto:dr_mriduljoshi@yahoo.com)
13. डॉ. शैलजा दुबे, प्राध्यापक, शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय भोपाल  
[shailjadubey70@yahho.in](mailto:shailjadubey70@yahho.in)
14. डॉ. प्रमिला श्रीवास्तव, आचार्य, शासकीय कला महाविद्यालय कोटा राजस्थान  
[dr21pramila@gmail.com](mailto:dr21pramila@gmail.com)
15. डॉ. जयशंकर शाही, आचार्य, अलवर राजस्थान  
[jayshankarshahi@gmail.com](mailto:jayshankarshahi@gmail.com)
16. डॉ. एन. पी. त्रिपाठी, सेवानिवृत्त आचार्य, रीवा मध्य प्रदेश  
[rajeshbhatt11@gmail.com](mailto:rajeshbhatt11@gmail.com)
17. डॉ. राजेश भट्ट, एच. एन. बी. केंद्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड  
[rajeshbhatt11@gmail.com](mailto:rajeshbhatt11@gmail.com)

### **Guide Lines**

- **General:** English and Hindi Editions of Research Journal are published separately. Hence Research Papers can be sent in Hindi or English.
- **Manuscript of research paper:** It must be original and typed in double space on the one side of paper (A-4) and have a sufficient margin. Script should be checked before submission as there is no provision of sending proof. It must include Abstract,Keywords, Introduction, Methods, Analysis, Results and References. Hindi manuscripts must be in Devlks 010 or Kruti Dev 010 font, font size 14 and in double spacing. All the manuscripts should be in two copies and in Email also. Manuscripts should be in Microsoft word program. Authors are solely responsible for the factual accuracy of their contribution.
- **References :** References must be listed cited inside the paper and alphabetically in the order- Surname, Name, Year in bracket, Title, Name of book, Publisher, Place and Page number in the end of research paper as under- Shukla Akhilesh (2018) Criminology, Gayatri Publications, Rewa : Page 12.
- **Review System:** Every research paper will be reviewed by two members of peer review committee. The criteria used for acceptance of research papers are contemporary relevance, contribution to knowledge, clear and logical analysis, fairly good English or Hindi and sound methodology of research papers. The Editor reserves the right to reject any manuscript as unsuitable in topic, style or form without requesting external review.

लेखकों से निवेदन-

- रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेज (ISSN-0973-3914) सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज की मुख्य शोध पत्रिका है, जो मानव संसाधन मंत्रालय तथा पंजीयक समाचार पत्र एवं पत्रिका, भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा पंजीकृत है।
- शोध पत्रिका उल्लिंच इन्टरनेशनल पीरियाडिकल्स डाइरेकट्री प्रोबेस्ट, संयुक्त राज्य अमेरिका से इंडेक्स्ड और लिस्टेड हैं।
- शोध पत्रिका का अंग्रेजी एवं हिन्दी संस्करण अलग-अलग प्रकाशित होता है।
- रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेस का प्रकाशन प्रतिवर्ष जून एवं दिसंबर में किया जाता है।
- रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइंसेस को इम्पैक्ट फैक्टर एवं आई.एस.एन प्राप्त हैं। शोध पत्रिका Peer-Reviewed हैं।
- शोध पत्रिका के नवीनतम अंक में प्रकाशित शोध पत्रों को हमारी वेबसाइट [www.researchjournal.in](http://www.researchjournal.in) (Current Issue) में देखा जा सकता है तथा डाउनलोड किया जा सकता है।
- शोध पत्रिका का प्रिंट एडीशन सदस्यों को अलग से डाक द्वारा भेजा जाता है।
- शोध पत्र में शीर्षक, नाम, पद, पदस्थापना का विवरण, पत्र व्यवहार का पता तथा दूरभाष क्रमांक,
- मोबाइल नं., ई-मेल एड्रेस अवश्य दिया जाये।
- शोध पत्र के प्रारम्भ में कम से कम 50-100 शब्दों का सारांश दिया जाये।
- मुख्य शब्द सारांश के नीचे टाइप कराया जाये।

- शोध पत्र में शोध पद्धति तथा शोध में प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण किया जाना चाहिए।
- शोध पत्र में निष्कर्ष और अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी जाये। संदर्भ ग्रंथों का विवरण पूरा दिया जाये। लेखक का नाम, वर्ष, पुस्तक का नाम, प्रकाशक का विवरण, प्रकाशक का स्थान और पृष्ठ संख्या आदि का विवरण दिया जाना चाहिए।
- शोध पत्र माईक्रोसॉफ्ट वर्ड की फाइल में टाइप किया हुआ होना चाहिए। (नोट- पेज मेकर की फाइल, पी.डी.एफ. फाइल, स्कैन मैटर आदि में कदापि शोध पत्र न भेजें) शोध पत्र हिन्दी लिपि में कृतिदेव या देवलिस फांट 010(फॉन्ट साइज 14, स्पेस डबल, मार्जिन ए-4 साईज के कागज में चारों तरफ 1 इंच) में भेजा जाना चाहिए।
- शोध पत्र के साथ यह घोषणा अवश्य संलग्न करें कि शोध पत्र मौलिक है तथा इसे कहीं अन्यत्र प्रकाशनार्थ प्रेषित नहीं किया गया है।

**सर्वप्रथम शोध पत्र ई-मेल द्वारा भेजें-**

**researchjournal97@gmail.com,  
researchjournal.journal@gmail.com**

शोध पत्र की स्वीकृति की सूचना सम्पादकीय कार्यालय द्वारा लेखक को ई-मेल एवं दूरभाष द्वारा प्रदान की जाती है।

© सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज  
एक अंक रुपये 500.00

-सदस्यता शुल्क -		
अवधि	व्यक्तिगत सदस्यता	संस्थागत सदस्यता
वर्ष एक	2000-00	2500-00
वर्ष दो	2500-00	4000-00

सदस्यता शुल्क की राशि गायत्री पब्लिकेशन्स के स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, ब्रांच-रीवा सिटी (आईएफएस कोड 0004667 MICR Code 486002003) के खाता क्रमांक 30016445112 में जमा की जाय।

प्रकाशक: गायत्री पब्लिकेशन्स

रीवा- 486001 (म.प्र.)

मुद्रक: ग्लोरी ऑफसेट

नागपुर

### संपादकीय कार्यालय

186/1, विन्ध्य विहार कॉलोनी

लिटिल बैम्बीनोज स्कूल कैम्पस

रीवा- 486001 (म.प्र.)

दूरभाष- 7974781746

E-mail- researchjournal97@gmail.com, researchjournal.journal@gmail.com

[www.researchjournal.in](http://www.researchjournal.in)

रिसर्च जरनल में प्रस्तुत किये गये विचार और तथ्य लेखकों के हैं, जिनके विषय में सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, सम्पादक मण्डल, प्रकाशक तथा मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। रिसर्च जरनल के सम्पादन एवं प्रकाशन में पूर्ण सावधानी रखी गई है, किन्तु किसी त्रुटि के लिए सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, सम्पादक मण्डल, प्रकाशक तथा मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। सम्पादन का कार्य अव्यावसायिक और ऑनरेरी है। सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र, रीवा जिला रीवा (म.प्र.) रहेगा।

## सम्पादकीय

समाज की मूलभूत और सबसे महत्वपूर्ण इकाई प्रारंभ से परिवार ही रहा है। देश के सशक्तिकरण एवं विकास के लिए सबसे पहले परिवार जैसी बुनियादी संस्थाओं के नैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आयामों पर हमें ध्यान देना अति आवश्यक है। समाज के विकास के लिए परिवार का संतुलित विकास अति महत्वपूर्ण है। अतः हमें यदि देश का संपूर्ण एवं संतुलित विकास करना है तो हमें परिवार नामक बुनियादी संस्था पर सबसे ज्यादा जोर देने की आवश्यकता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम परिवार में पुत्र और पुत्री के बीच कोई भी भेदभाव ना करें और यह हम अपने पुत्रों को आवश्यक रूप से समझाएं और उनके क्रियाकलापों में शामिल भी करवाएं। आज भी पुरानी मान्यता के जो लोग हैं, उनका यह मानना है कि औरत को कोई आजादी नहीं मिल सकती, वह अकेले कहीं नहीं जा सकती है, वह अकेले कहीं घूम-फिर नहीं सकती है, लेकिन इन मूल्यों को आज का युवा मानने से इनकार करता है।

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि मकान में जो महत्वपूर्ण स्थान दीवालों का का होता है, समाज में वही महत्व लड़कों की शिक्षा का है। लेकिन घर बनता कैसे है? घर के आधार में कौन है? घर के आधार में हमारी पुत्रियां हैं, हमारी लड़कियां हैं, अर्थात् उनका संबंध जड़ से है। समाज में अगर हमारी जड़ ही कमजोर हो गई तो हमारा घर या मकान बिल्कुल मजबूत नहीं हो सकता है। इस सामाजिक संदर्भ को यथार्थ में समझने की आवश्यकता है।

पक्षपात की हद तो तब हो जाती है जब छोटे छोटे कार्यों में हमें भेदभाव दिखता है। कुछ लोगों ख्याल है कि लड़की पराया धन होती है, उसे कौन सी नौकरी करनी है। इसलिए कुछ मां-बाप लड़के और लड़की में भेदभाव करते हैं और यह भेदभाव हमारे व्यवहार में खिलाने-पिलाने में पहनाने-उढ़ाने में भी कहीं ना कहीं दिखाई देता है। यह सरासर अन्याय है। ईश्वर ने लड़के और लड़कियों को एक जैसा मस्तिष्क दिया है और आज लड़कियां बेहतर परिणाम लाकर यह सिद्ध भी कर रही हैं।

लड़कियां तो मां-बाप के घर कुछ ही दिन रहती हैं, इसलिए हमारा यह कर्तव्य है कि हम उनके शिक्षा-दीक्षा, पालन-पोषण पर गहराई से ध्यान दें, तभी हम एक सशक्त समाज की संकल्पना को पूरा कर सकते हैं। ईश्वर ने हमें हमारे बच्चों का ट्रस्टी बनाया है इसलिए हमारा यह कर्तव्य है कि हम पूरे न्याय के साथ सभी सदस्यों के साथ समान व्यवहार करें क्योंकि लड़के और लड़कियों दोनों में एक जैसी शक्ति है, एक ही आत्मा है। अतः हमें उन्हें विकास का समान अवसर दिया जाना चाहिए।

महिला सशक्तिकरण का मूलभूत उद्देश्य महिलाओं का विकास और उनमें आत्मविश्वास का संचार करना है। महिला सशक्तिकरण समाज के संपूर्ण विकास के लिए महत्वपूर्ण है। महिलाओं का सशक्तिकरण सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक प्रघटना है, क्योंकि वे रचनाकार होती हैं। अगर आप उन्हें सशक्त करें, उन्हें शक्तिशाली बनाएं, प्रोत्साहित करें, यह समाज के लिए बेहतर है। महिला और पुरुष सृष्टि निर्माण और मानव समाज के आधार हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। ये जीवन रूपी रथ के ऐसे पहिये हैं

जिनसे जीवन-यात्रा सुचारू रूप से संचालित होती है। परिवार और समाज में स्थायित्व के लिए दोनों की ही भूमिका समान रूप से महत्वपूर्ण रही हैं। किसी समाज में परिवर्तन और विकास का आधार पुरुषों और महिलाओं के पारस्परिक मेल-जोल, कदम से कदम मिलाकर चलने और दोनों की समान गतिशीलता पर ही निर्भर है। किसी भी एक पक्ष के पिछड़ने पर सामाजिक जीवन में अराजक स्थिति निर्मित होती है। मानव जाति का इतिहास इसका साक्षी है कि जहाँ महिलाओं की उपेक्षा की गई है, वहाँ समाज का विकास अवरुद्ध हुआ है। सृष्टि की रचना, बच्चों की शिक्षा, परिवार की परवरिश के रूप में महिला की भूमिका पुरुष से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होने से समाज रचना में उसकी स्थिति केन्द्रीय हो जाती है। अतः स्त्रियों की उन्नति के बिना मानव जाति और समाज का उत्थान नहीं हो सकता। जहाँ तक भारत का संबंध है “यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता” अर्थात् जहाँ महिलाओं की पूजा होती है। वहाँ देवताओं का वास होता है। इस आदर्श के साथ कोई भी भारतीय स्त्री पश्चिमी स्त्री की तुलना में गौरव का अनुभव कर सकती है। विद्या का आदर्श सरस्वती में, धन का आदर्श लक्ष्मी में, पराक्रम का आदर्श दुर्गा में, हमें केवल भारत में ही देखने को मिलता है।

(डॉ. अखिलेश शुक्ल)  
प्रधान सम्पादक

## अनुक्रमणिका

01	<b>वीर सावरकरः भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक अविस्मरणीय चरित्र</b>	09
	<b>अरुण श्रीवास्तव</b>	
02	<b>भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उत्तराखण्ड की महिलाओं का योगदान</b>	15
	<b>राजेश चन्द्र पालीबाल</b>	
03	<b>डॉ. लोहिया का सांस्कृतिक चिन्तनः रामायण मेला योजना के विशेष सन्दर्भ में सुधा गुप्ता</b>	20
04	<b>महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना का समाजशास्त्रीय अध्ययन (आगरा जिले के पिनाहट विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में) भूरी सिंह, अतुल कुमार</b>	25
05	<b>भारतीय जीवन में शिवोपासना का धार्मिक महत्व</b>	30
	<b>अशुतोष शुक्ल</b>	
06	<b>महात्मा गाँधी : महिला विकास के प्रति दृष्टिकोण</b>	39
	<b>सीमा श्रीवास्तव</b>	
07	<b>महिला नेतृत्व के सामाजिक एवं आर्थिक पहलुओं का विश्लेषण (रीवा जिले की पंचायतों के विशेष संदर्भ में एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन) कोमल पांडे, अखिलेश शुक्ल</b>	44
08	<b>महिला अपराधिता पुनर्वास एवं जेल व्यवस्था</b>	53
	<b>गजानन मिश्र</b>	
09	<b>घरेलू हिंसा: वर्तमान समय की गहन समस्या व समाधान</b>	60
	<b>अलका रानी</b>	
10	<b>भारतीय अर्थव्यवस्था और वर्तमान आर्थिक चुनौतियाँ: एक विश्लेषण बिन्ध्याचल साह</b>	66
11	<b>नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ</b>	78
	<b>सिद्धार्थ मिश्र</b>	
12	<b>वैश्वीकरण का सामाजिक- आर्थिक प्रभाव</b>	82
	<b>अजय सिंह गहरवार, अवनीश सिंह, महानन्द द्विवेदी</b>	
13	<b>सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग क्षेत्र में स्टार्टअप योजना</b>	92
	<b>संगीता कुमारे</b>	
14	<b>स्टार्ट अप योजना एवं पिछड़े वर्ग की महिलाओं का सशक्तिकरण:एक समाजशास्त्रीय अध्ययन कृष्ण कुमार पटेल, एस.एम.मिश्र</b>	101
15	<b>सतना जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की समस्या एवं समाधान गायत्री देवी, आर. पी. गुप्ता</b>	108
16	<b>मध्यप्रदेश में कृषि विकास की संभावनाएं एवं चुनौतियाँ</b>	115
	<b>सुनीता सोलंकी</b>	
17	<b>पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य (नईगढ़ी-पिपराही के संदर्भ में) बंदना मिश्र</b>	121

18	<b>शहडोल संभाग में पर्यटन विकास का पारिस्थितिकी पर प्रभाव</b>	127
	<b>बी. पी. सिंह, सविता पटेल</b>	
19	<b>समाज और संस्कृति की विकास यात्रा (भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में)</b>	133
	<b>दिव्या मिश्रा</b>	
20	<b>शिव ब्रात है?</b>	137
	<b>अशुतोष शुक्ल</b>	
21	<b>श्रीमद्भगवद्गीता में मोक्ष योग</b>	143
	<b>प्रत्यूष वत्पला द्विवेदी</b>	
22	<b>जैवविविधता और मानवीय क्रियाकलाप (पश्चिमी घाट के विशेष संदर्भ में)</b>	147
	<b>सुनील बाबू विश्वकर्मा, आकृति खरे</b>	
23	<b>पराबैग्नी किरणें ओजोन परत को किस तरह प्रभावित करती हैं</b>	152
	<b>मंजरी अवस्थी</b>	
24	<b>भारतीय संस्कृति में स्वदेशी खेलों की प्रासंगिकता का महत्व</b>	156
	<b>ममता</b>	
25	<b>भारतीय संविधान की प्रस्तावना में निहित भावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन</b>	166
	<b>पुरुषोत्तम कुमार साहू, अविनाश कुमार लाल</b>	
26	<b>लिंग भेदभाव का महिलाओं के विकास के अवसरों पर पड़ने वाले</b>	171
	<b>प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन (सतना जिले के विशेष संदर्भ में)</b>	
	<b>राधा मिश्रा, अमर जीत सिंह, अजय आर. चौर</b>	
27	<b>महिला एवं बाल विकास योजनाओं का ग्रामीण महिलाओं की पारिवारिक</b>	179
	<b>स्थिति पर प्रभाव (जिला सतना के विशेष संदर्भ में)</b>	
	<b>विमलेश द्विवेदी, अखिलेश शुक्ल</b>	
28	<b>लैंगिक असमानता के कारण एवं समाधान का समाजशास्त्रीय अध्ययन</b>	188
	<b>राधा मिश्रा, अमर जीत सिंह, अजय आर. चौर</b>	
29	<b>महिला नेतृत्व एवं ग्रामीण विकास</b>	194
	<b>(सीधी जिले की त्रिस्तरीय पंचायतों के विशेष संदर्भ में)</b>	
	<b>शिखा पाण्डेय, अखिलेश शुक्ल</b>	
30	<b>बाल मानवाधिकार एवं भारत के समक्ष चुनौतियां</b>	198
	<b>जगदीश प्रसाद, सर्वोत्तम कुमार</b>	
31	<b>भारत में रोजगार की प्रवृत्तियाँ : महिलाओं के विशेष संदर्भ में</b>	203
	<b>कुमुद श्रीवास्तव</b>	
32	<b>पंचायतीराज अधिनियम का प्रभाव महिला नेतृत्व एवं सामाजिक जागरूकता</b>	210
	<b>(सीधी जिले की त्रिस्तरीय पंचायतों के विशेष संदर्भ में)</b>	
	<b>शिखा पाण्डेय, अखिलेश शुक्ल</b>	
33	<b>अंतर्राष्ट्रीय विधि के अन्तर्गत बच्चों के शिक्षा के अधिकारः भारत के संदर्भ में</b>	217
	<b>जगदीश प्रसाद, सर्वोत्तम कुमार</b>	
34	<b>सल्लनकालीन महोबा</b>	223
	<b>महेन्द्र मणि द्विवेदी, रानू चौरसिया</b>	

## घरेलू हिंसा: वर्तमान समय की गहन समस्या व समाधान

• अलका रानी

**सारांश-** घरेलू हिंसा से तात्पर्य वैवाहिक दुर्व्यवहार, अतरंग साथी हिंसा, घरेलू मारपीट या पारिवारिक हिंसा आदि से है। घरेलू हिंसा दुनिया के लगभग हर समाज में मौजूद है, जिसकी जड़ें हमारे समाज एवं परिवार में गहराई तक जम गई है। परिवार एवं समाज के संबंधों में पर्याप्त ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, अपमान एवं विद्रोह घरेलू हिंसा के मुख्य कारण है। प्रकृति ने महिला और पुरुष की शारीरिक सरचनाएं जिस तरह की है उनमें महिला हमेशा नाजुक एवं कमजोर रही है वही हमारे देश में यह माना जाता रहा है कि पति को पत्नी पर हाथ उठाने का अधिकार शादी के बाद मिल जाता है। परिवार में हिंसा शिकार सिर्फ महिलाएं ही नहीं बल्कि वृद्ध और बच्चे भी बन जाते हैं। प्रस्तुत लेख में घरेलू हिंसा, इसके प्रकार और विशेष रूप से वर्तमान समय में महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा के बारे में चिंतन किया गया है।

**मुख्य शब्द -** घरेलू हिंसा, वैवाहिक दुर्व्यवहार, घरेलू मारपीट

**1. भूमिका-** घरेलू हिंसा से तात्पर्य वैवाहिक दुर्व्यवहार, अतरंग साथी हिंसा, घरेलू मारपीट या पारिवारिक हिंसा आदि से है। यदि कोई ऐसा व्यक्ति जिसका महिला के पारिवारिक संबंध है के द्वारा किसी महिला का शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, मौखिक, मनोवैज्ञानिक या यौन शोषण किया जाता है तो यह घरेलू हिंसा में सम्मिलित माना जाता है। राज्य महिला आयोग के अनुसार कोई भी महिला यदि परिवार के पुरुष द्वारा की गई मारपीट या अन्य प्रताड़ना से ग्रहस्त है तो वह घरेलू हिंसा की शिकार कहलाएगी। यदि कानूनी रूप से घरेलू हिंसा की बात की जाये तो “घरेलू हिंसा के विरुद्ध महिला संरक्षण अधिनियम की धारा 2005” ने घरेलू हिंसा को निम्न प्रकार परिभाषित किया है, “प्रतिवादी का कोई बर्ताव, भूल या किसी ओर को काम करने के लिएनियुक्त करना, घरेलू हिंसा में माना जाएगा।” इसमें महिला को हानि पहुंचाना, जख्मी करना या पीड़ित व्यक्ति के स्वस्थ जीवन अंगों या हित को मानसिक या शारीरिक रूप से खतरे में डालना या ऐसा करने की नीयत रखना शामिल हैं। इसमें शारीरिक, यौनिक, मौखिक या भावनात्मक और आर्थिक शोषण भी सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त:

- दहेज या अन्य संपत्तिया मूल्यवान प्रतिभूति की अवैध मांग को पूरा करने के
- प्रोफेसर व संकायाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, मदरहुड विश्वविद्यालय, रुडकी (हरिद्वार)

- लिए महिला या उसके रिश्तेदारों को मजबूर करने के लिए यातना देना, नुकसान पहुंचाना या जोखिम में डालना; या
- पीड़ित या उसके निकट संबंधियों पर उपरोक्त वाक्यांश; या भारत में सम्मिलित किसी आचरण के द्वारा दी गई धमकी का प्रभाव होना या
  - पीड़ित को शारीरिक या मानसिक तौर पर घायल करना या नुकसान पहुंचाना। या शिकायत किया गया कोई व्यवहार या आचरण भी घरेलू हिंसा के दायरे में आता है। हालाँकि इसका निर्णय प्रत्येक मामले के तथ्य विशेष के आधार पर किया जाता है।

## 2. घरेलू हिंसा के विभिन्न रूप - भारत में घरेलू हिंसा के विभिन्न रूप हैं:

**2.1. महिलाओं के विरुद्ध घरेलू हिंसा-** किसी भी महिला को शारीरिक एवं मानसिक रूप से दुख पहुंचाना महिला के विरुद्ध घरेलू हिंसा है। इसमें महिलाओं का शोषण करना उसके साथ मारपीट करना, यौन इच्छाओं की पूर्ति के लिए उसके साथ दुर्व्यवहार करना, महिला को अपमानित करना, महिलाओं को अश्लील साहित्य व अश्लील तस्वीरों को देखने के लिए विवश करना, या उन्हें आत्महत्या की धमकी देना आदि घरेलू हिंसा के रूप ही हैं।

**2.2. पुरुषों के विरुद्ध घरेलू हिंसा-** महिलाएं ही घरेलू हिंसा की शिकार हुई हों ऐसा नहीं है। भारत में घरेलू हिंसा का शिकार पुरुष भी हुए हैं, और यह गंभीर विषय है कि यह स्थिति धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है। इसका प्रमुख उदाहरण चंडीगढ़ और शिमला में सैकड़ों पुरुषों द्वारा अपनी पत्नियों और परिवार के अन्य सदस्यों के खिलाफ घरेलू हिंसा होने के कारण सरकार से गुहार लगाना रहा है।

**2.3. बच्चों के विरुद्ध घरेलू हिंसा-** भारतीय समाज में महिलाओं व पुरुष के अतिरिक्त बच्चे एवं किशोर भी हिंसा के शिकार होते हैं। यदि आंकड़ों की बात की जाये तो बच्चों के साथ घरेलू हिंसा के मामलों को महिलाओं के साथ घरेलू हिंसा के बाद दूसरे स्थान पर रखा गया है। हालाँकि ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों घरेलू हिंसा का अधिकतर शिकार होते हैं। इसके अलावा उच्च एवं निम्न वर्ग के परिवारों में इसके स्वरूप में भिन्नता पाई जाती है।

**2.4. बुजुर्गों के विरुद्ध घरेलू हिंसा-** इस प्रकार के घरेलू हिंसा में घर के बुजुर्गों के साथ परिवार के सदस्यों द्वारा किया गया दुर्व्यवहार शामिल होता है अर्थात् इस घरेलू हिंसा में हिंसा का शिकार घर की बुजुर्ग महिला या पुरुष होते हैं। भारत में इस प्रकार के घरेलू हिंसा अत्यंत संवेदनशील है जिसमें बुजुर्गों के साथ मारपीट करना उनसे अधिक घरेलू कार्यों को कराना उनकी आवश्यकताओं को पूरा न करना आदि कार्य शामिल है।

**3. घरेलू हिंसा के कारण-** घरेलू हिंसा के कारणों को वर्णन निम्न प्रकार किया जा सकता है—

1. यह सर्व धारणा है कि महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा शारीरिक एवं भावनात्मक रूप से कमजोर होती हैं। कुछ लोगों की यह मानसिकता भी है कि वे महिलाओं के शारीरिक एवं भावनात्मक रूप से कमजोर होने के कारण उनके साथ हिंसात्मक कार्यों को आसानी से अंजाम देंगे, इसलिये वे महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार व हिंसात्मक कार्य करने लगते हैं। अतः बुरी मानसिकता होना घरेलू हिंसा होने का प्रमुख कारण है।

2. कुछ व्यक्ति महिला के चरित्र पर संदेह करते हैं जिससे उन्हें वह अनेक तरह के आरोप लगाकर प्रताड़ित करते हैं। यह भी घरेलू हिंसा होने का अन्य कारण है।
  3. महिलाओं द्वारा यौन संबंधों को बनाने से इंकार करना, स्वादिष्ट खाना बनाने से इनकार, पति पत्नी के बीच में दहेज विवाद, सभी को बिना बताए घर से बाहर जाना, बच्चों की वजह से मतभेद आदि से भी पुरुष लोग घरेलू हिंसा करने लगते हैं।
  4. पतियों के निर्देशों का पालन न करना विवाह से संबंधित बातें, आय का कम होना, घरेलू कार्य में स्त्रियों का साथ ना देना, शराब या नशे का सेवन, पुरुषों का बांझपन, पति-पत्नी द्वारा एक दूसरे के परिवारों के लिए कटु वचनों का प्रयोग करना आदि कारण महिलाओं के पुरुषों के प्रति होने वाली घरेलू हिंसा के प्रमुख कारण हैं।
  5. कुछ व्यक्तियों के साथ घरेलू हिंसा होने का कारण उनका अपने माता-पिता पर पैसा खर्च करना अपने माता-पिता को भावनात्मक रूप से पीड़ित करना व उनसे दूर होने के लिए उन्हें प्रताड़ित करना शामिल है। साथ ही उनके साथ मारपीट करना भी इसी श्रेणी में आता है।
  6. इसके अतिरिक्त महिलाओं में घरेलू हिंसा का कारण उनके द्वारा ससुराल के सदस्यों की देखभाल न करना, महिलाओं में बांझपन एवं वैवाहिक संबंधों में लिप्त रहना सभी घरेलू हिंसा के कारण हैं।
- 4. घरेलू हिंसा : दुष्प्रभाव-** घरेलू हिंसा के प्रमुख दुष्प्रभाव शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक प्रभाव हैं। परिवार में आपसी रिश्तों, आस-पड़ोस के साथ बच्चों पर भी हिंसा का सीधा दुष्प्रभाव देखा जा सकता है। इसके मुख्य प्रभाव निम्न प्रकार के हैं-
- यदि कोई व्यक्ति घरेलू हिंसा का शिकार होता है तो उसके मन में यह डर बाहर निकालना अत्यधिक कठिन होता है क्योंकि उसके मन में एक नकारात्मक सोच पैदा हो जाती है जिससे उसका बाहर निकलना कठिन हो जाता है।
  - घरेलू हिंसा के शिकार व्यक्ति पर इस बात का तनिक असर होता है कि जिस व्यक्ति पर हम विश्वास करते हैं वही हमारे साथ हिंसा करता है। इसलिए उसका रिश्ता ऊपर से विश्वास उठ जाता है और वह आत्महत्या जैसे अपराध पर बैठता है क्योंकि वे जीवन के अपने आप को अकेला महसूस करने लगता है।
  - घरेलू हिंसा का शिकार व्यक्ति कई बार अपना मानसिक संतुलन भी खो बैठता है।
  - सीटी स्कैन आदि से पता चला है कि जिन बच्चों ने अपना जीवन इस घरेलू हिंसा को देखते-देखते गुजारा है, उनके मस्तिष्क का कोलौसक और हिमैपाकेमप्स भाग सिकुड़ जाता है, जिससे उनकी सीखने व संज्ञानात्मक भावनात्मक समझने की क्षमता कम हो जाती है। इस प्रकार घरेलू हिंसा का सबसे अधिक व्यापक प्रभाव बच्चों पर पड़ता है।
  - साथ ही इस प्रकार की घरेलू हिंसा के शिकार बालक-बालिकाओं के मस्तिष्क पर इसका प्रभाव बहुत ज्यादा पड़ता है और लड़के गुस्सैल हो जाते हैं वह सही तरीके से बात नहीं करते और किसी का सम्मान भी नहीं करते इसके विपरीत

घरेलू हिंसा की शिकार हुई लड़कियां डरपोक और आत्मविश्वास से कमजोर हो जाती हैं।

**5. पुलिस की भूमिका-** घरेलू हिंसा के प्रकरणों में कई बार पुलिस द्वारा FIR दर्ज नहीं की जाती। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रताड़ित महिलाओं को FIR की नकल भी नहीं दी जाती है। मांगने पर अकारणउन्हें परेशान किया जाता है। आंकड़े बढ़ जाएंगे इस कारण भी पुलिस केस पंजीकृत करने से बचती है।

पति द्वारा महिलाओं को पीटने एवं मानसिक यातना देने को पुलिस बहुत बड़ा मुद्दा मानती है। उनका कहना होता है कि, पति जी ने तो ही पीटा है, ऐसी क्या बात हो गई पति मारता है तो प्यार भी तो करता है यह कहकर पुलिस महिला को टाल देती है।

थाने में सिर्फ एक या दो महिला सिपाही ही है। महिला या घरेलू हिंसा से संबंधित प्रकरणों में प्रायः उनका हस्तक्षेप कम कर दिया जाता है क्योंकि उनका अधिकारी सहित बहुमत पुलिस का है। यही कारण है कि महिला पुलिसकर्मी भी घरेलू हिंसा की शिकार महिला की ज्यादा सहायता नहीं कर पाती है। कई बार तो उनका पुलिस वाले भी उनका शोषण करते हैं। पुलिसकर्मी रिश्वत लेकर प्रताड़ित महिला को समझौते के लिए विवश करते हैं। पुलिस का कहना होता है कि दहेज तथा घरेलू हिंसा के झूठे प्रकरण ही अधिक होते हैं। 98 प्रतिशत मामलों में पुलिस बिना किसी प्रशिक्षित परिवारिक परामर्शदाता के सलाह देती है अथवा समझौता करा देती है। समझौते में न तो घटना का व्यौरा होता है और ना ही पति द्वारा यह लिखा जाता है कि भविष्य में वह ऐसा नहीं करेगा।

**6. घरेलू हिंसा समाधान-** घरेलू हिंसा समाधान में निम्न कदम महत्वपूर्ण हो सकते हैं:

6.1 “पुरुषों को महिलाओं के खिलाफ रखने” के स्थान पर पुरुषों को इस समाधान का भाग बनाया जाए। मर्दनगी की भावना को स्वस्थ मायने में बढ़ावा देने और पुराने घिसे-पिटे ढेर से छुटकारा पाना अनिवार्य है।

6.2. सरकार ने वन स्टॉप सेंटर जैसी योजनाएं प्रारंभ की हैं जिनका उद्देश्य हिंसा की शिकार महिलाओं की सहायता के लिए चिकित्सीय, कानूनी और मनोवैज्ञानिक सेवाओं की एकीकृत रेंज तक उनकी पहुंच को सुगम व सुनिश्चित करता है।

6.3. महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए वोंग इंडिया ने “लड़के रुलाते नहीं” अभियान चलाया जबकि वैश्विक मानवाधिकार संगठन ब्रेक F द्वारा घरेलू हिंसा के खिलाफ ‘बेल बजाओ’ अभियान चलाया गया। यह दोनों ही अभियान महिलाओं के साथ होने वाली घरेलू हिंसा से निपटने के लिए निजी स्तर पर किए गए सफल प्रयास थे।

अन्य उपाय निम्नवत हो सकते हैं -

6.4. शिक्षा संस्थाओं में छात्राओं को खुलकर घरेलू हिंसा पर शिक्षा देनी चाहिए ताकि वे घरेलू हिंसा का शिकार ना हो। उन्हें काउंसिलिंग तथा कानूनी ज्ञान की जानकारी देना उचित होगा।

6.5. सामान्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में पता लग जाता है कि किसके घर में समस्या चल रही है, लेकिन शहरी क्षेत्रों में यह पता नहीं लग पाता है। इस कारण वहां हर स्तर पर बात करने की आवश्यकता है।

**6.6. शिक्षा के साथ-साथ लड़कियों में आत्मविश्वास पैदा हो, ऐसा प्रयास करना चाहिए। यह कार्यशिक्षा का है।**

**6.7. संपत्ति में भी लड़कियों को पूरा अधिकार होना चाहिए घर का वातावरण लड़की को आत्मविश्वासी बनाता है अतः उसे मजबूत करने की आवश्यकता है। हालाँकि यह सरकार द्वारा पैत्रिक संपत्ति में लड़कियों/महिलाओं का हिस्सा तैय कर दिया है परंतु फिर भी समाज का भय दिखा कर, शादी के बाद पिता के घर ना आने देना आदि भय दिखा कर लड़कियों/महिलाओं से शादी के बाद अपने हिस्से को न लेने पर हस्ताक्षर करा लिए जाते हैं, इससे उन्हें अपने हिस्सा नहीं मिल पाता।**

**7. महिला घरेलू हिंसा कानून-** इस कानून का उद्देश्य घरेलू रिश्तों में हिंसा झेल रही महिलाओं के तत्काल से आपातकालीन राहत पहुंचाना है। इस कानून का मुख्य उद्देश्य किसी भी महिला को हिंसा मुक्त घर में रहने का अधिकार दिलाना है।

हमारे इस समाज में महिलाओं के लिए ना मायके में कोई जगह है और ना ही ससुराल में। यही कारण है कि महिलाएं सर छुपाने के लिए और पैरटिकाने के लिए जमीन के एवज बहुत कुछ अनचाहे समझौते करती रहती हैं। यह भारत में पहला ऐसा कानून है जो महिलाओं को अपने घर में रहने का अधिकार देता है। इस कानून के अनुसार महिला के साथ हुए घरेलू हिंसा यानी ऐसी कोई भी हरकत या व्यवहार जो कि महिला के शरीर के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होकर दर्द या चोट पहुंचाए। ऐसा कोई भी आपत्तिजनक व अनचाहा यौनिक व्यवहार व हरकत जो महिला को शारीरिक कष्ट या अपमानित करें या उसके मान सम्मान को चोट पहुंचाएं। ऐसी समस्त घरेलू संसाधन व सुविधायें हैं जिसके महिला व उसके बच्चे को जरूरत हैं एवं जिस पर उनका अधिकार बनता है।

इस कानून के तहत घरेलू हिंसा की रोकथाम के लिए जज या अदालत 3 दिन के अंदर बचावकारी आदेश एवं गिरफ्तारी के बारंट जारी करेंगे। घरेलू हिंसा से पीड़ित कोई भी महिला अदालत या जज के समक्ष स्वयं अथवा वकील सेवा प्रदान करने वाली संस्था या संरक्षक अधिकारी की मदद से अपनी सुरक्षा के लिए बचावकारी आदेश ले सकती है। इस कानून के अंतर्गत मिलने वाली राहत के बचाव कार्य आदेश क्षतिपूर्ति भरण पोषण बच्चों का संरक्षण और आवश्यकता होने पर रहने की जगह दी जाती है। इस कानून के अंतर्गत नियुक्त संरक्षण अधिकारी की जिम्मेदारी यह है कि पीड़ित महिला को आवेदन लिखने में सहायता करना तथा आवेदन को जज तक पहुंचाना एवं कोर्ट से राहत दिलावाना आदि शामिल हैं।

**8. उपसंहार-** भारत में महिलाओं की स्थिति को लेकर हमेशा चिंता जताई जाती है। लेकिन गत कुछ वर्षों में सरकारी प्रयासों और समाज बदलते परिवेश में महिलाओं की स्थिति सुधार रही है। समाज और परिवार में महिलाओं की स्थिति में धीरे-धीरे ही सही पर सकारात्मक परिवर्तन आ रहा है। सरकार ने महिलाओं और बच्चों को घरेलू हिंसा संरक्षण देने के लिए घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 (घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम) को संसद से पारित भी कराया है। इस कानून के तहत सभी प्रावधानों का पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए समझना जरूरी है कि पीड़ित कौन है। यदि आप एक महिला हैं और आपके रिश्तेदारों में से कोई व्यक्ति आपके प्रति दुर्व्यवहार करता है तो आप इस अधिनियम के

तहत कारबाई कर सकती हैं। मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम 2017 (सालेलकर, 2018) द्वारा भी भारत मानसिक स्वास्थ्य के प्रति गंभीर हो गया है लेकिन इसे और अधिक प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता है। साथ ही घरेलू हिंसा से उबरने वाले परिवारों के पेशेवर मानसिक सेवाओं का लाभ उपलब्ध कराने के लिए तंत्र विकसित करने की जरूरत है। यह परिवर्तन शिक्षा से लेकर स्वास्थ्य तक के आंकड़ों में दिखाई देता है। महिला सशक्तिकरण की दिशा में देश में प्रगति भी हुई है, लेकिन बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ और अधिक प्रयासों की जरूरत है। ऐसा ही एक क्षेत्र है -घरेलू हिंसा के जिसके प्रति महिलाएँ जागरूक तो हुई हैं लेकिन इसमें और अधिक प्रयासों की आवश्यकता है।

### **संदर्भ ग्रन्थ सूची-**

1. प्रो. आभा एवं ममता (2010)- घरेलू हिंसा अधिकारों के प्रति जागरूकता, आहूजा प्रकाशन दिल्ली
2. सालेलकर, अम्बा (2018), मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम 2017 की समीक्षा whiteswanfoundation.org-
3. सक्सेना, अल्का व गुप्ता, चन्द्रसुभाष (2011), पारिवारिक प्रताड़ना एवं महिलाएं, राधा पब्लिकेन्स, नई दिल्ली
4. सिंह, निशात (2011), अपराध बनाम महिलाएँ, खुशी प्रकाशन, दिल्ली
5. शर्मा, एम के. (2010), भारतीय समाज में नारी, पब्लिशिंग हाउस दिल्ली
6. श्रीवास्तव, सुधारानी (2009), महिला उत्पीड़न और वैधानिक उपचार, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।